भोर-पारखी

भोर-पारखी

अमरकांत कुमर

अमरकांत कुमर

निवेदन

गीत-प्रेमियों के हाथों में दूसरा गीत-संग्रह 'भोर पाखी' सौंपते हुए मुझे अपार हर्ष हो रहा है। पहले गीत-संग्रह 'गा बंजारा' के प्रकाशन के ठीक एक वर्ष बाद इसका प्रकाशन हो रहा है और इस संग्रह में इसी अवधि में लिखे गीत संकलित हैं।

इस गीत-संग्रह में प्रकृति, जीवनानुभूति और प्रेमानुभूति के अतिरिक्त कुछ तल्ख सच्चाईयों से दो-चार होते 'नव-गीतों' को भी जगह दी गई है। वैसे इस गीत-संग्रह का भी मूल स्वर प्रेमाभिव्यक्ति ही है।

रचना के संबंध में एक चीज स्पष्ट कर दूँ कि कवि या गीतकार जो अनुभूत करता है या कल्पना में जिस अनुभूति का साक्षात्कार करता है, अपनी रचनाओं में उसी को ढालने की कोशिश करता है। इस भावमूर्ति-संरचना में कवि-गीतकार के औज़ार शब्द और कल्पना होते हैं। यह अलग बात है कि इस प्रयास में कुछ मूर्ति सुन्दर बन पाती है कुछ अनगढ़ भी। पर इतना तो तय है कि रचना की यह दशा या अवस्था जागतिक धरा से कुछ ऊपर की होती है, आसन कुछ उठा हुआ होता है संसार से, जबकि बातें संसार की ही होती हैं। रचना-दशा स्थूल से सूक्ष्म की ओर स्थानान्तरण की होती है। एक हद तक यह साधना-दशा होती है। इसीलिए गीतों में शब्द वे ही व्यवहार के आते हैं पर अर्थ की परतें गहराईयाँ और व्यंजना की अनेकमुखी परिव्याप्ति आ जाती हैं, अर्थ निगूढ़ हो जाते हैं। 'स्वांत: सुखाय' लिखकर भी कवि-गीतकार पाठक और श्रोता की स्वानुभूति को उद्‌बुद्‌ध करने में समर्थ होता है। कविता और गीत की यही ताकत उसे जन-जन में प्रिय बनाती है। गीत शायद इसीलिए गुनगुनाने योग्य बन जाते हैं। 'परान्तः सुखाय' की अभिव्यक्ति का माध्यम बन जाते हैं।

मेरे स्नेहियों ने सदा मुझे रचनाशील रहने और रचना को प्रकाशित करने को उत्साहित किया है, मुझे उनका आभारी होना चाहिए। विशेषरूप से मैं प्रसिद्‌ध समालोचक 'साहित्य-यात्रा' के प्रधान संपादक एवं कहानीकार प्रो. कलानाथ मिश्र, राष्ट्रीय स्तर के कथाकार रामधारी सिंह दिवाकर, गुरुवर प्रो. प्रसिद्‌ध ग़ज़लगो नरेन्द्र, प्रभाकर पाठक, वरिष्ठ कवि एवं गीतकार अजित कुमार वर्मा, प्रसिद्‌ध कवि डॉ. रत्नेश्वर सिंह प्रतिष्ठित कवि मनोज कुमार झा, प्रिय मित्र कृष्णकुमार झा एवं युवा कवि डॉ. अमित कुमार मिश्र के प्रति आभारी हूँ।

प्रसिद्‌ध गीतकार आदरणीय भाई साहब बुद्‌धिनाथ मिश्र और आदरणीय यश मालवीय जी मेरे मार्गदर्शक और प्रेरक रचनाकार हैं। उनेक प्रति विनम्रता ज्ञापित करता हूँ।

'भोर पाखी' के प्रकाशन के लिए शिल्पायन पब्लिकेशन को बहुत-बहुत धन्यवाद।

अमरकान्त कुमर

1. नदी तट पर हम आया करते थे

ऐसी तड़प, नदी-तट पर हम आया करते थे

एक-दूजे की बाहों में खो जाया करते थे।

तुम थे, हम थे और समय था, बातें करते थे

सारी रातें आँखों में कि बिताया करते थे

भोर की लाल किरण- से हम मुस्काया करते थे। ऐसी तड़प.....

सपने बुने नए जीवन के सिर्फ बसन्त भरे

महमह अपनी फुलवारी थी जिसमें वृक्ष हरे

हरसिंगार-सी मुस्कानें बरसाया करते थे। ऐसी तड़प.....

तेरी मदिरालस आँखों मे मैं खो जाता था

चलते-चलते इस जंगल में मैं सो जाता था

जीवन चलना ही चलना बतलाया करते थे। ऐसी तड़प.....

मन ने मन की ऊंगली धर कब चलना सीखा था

यह तो पता नहीं है, लेकिन चलना सीखा था

एक यकीं था जिसके बल बढ़ जाया करते थे। ऐसी तड़प.....

हमने इक-दूजे को फूलों-सा महकाया है

कठिन धूप में शीतल बादल की हम छाया हैं

स्नेह-स्नात मन के ऊपर हम छाया करते थे। ऐसी तड़प.....

29.07.2024

2. रोज आती याद

रोज आती याद तेरी तुम कहाँ प्रिये हो

साँस में खूश्बू-सी आती तुम कहाँ प्रिये हो।

मन मचलता पकड़ लूँ खुश्बू के धागे को

उड़ा दूँ स्यन्दन हवा में और आगे को

बाँह में सुरधनु की परछाई करूँ बन्दी

फिसल जाऊँ बिजलियों के पकड़ तागे को

मैं क्षितिज पर खड़ा हूँ पर तुम कहाँ प्रिये हो।। रोज आती.....

मैं हिमों की शिला पर उत्तप्त होता हूँ

मैं शलभ की दाह से परितप्त होता हूँ

मधुमास की अँगड़ाइयाँ अंगों में बैठी हैं

नशों मे ज्वालामुखी के बीज बोता हूँ

चाह चन्दन लेप दो पर तुम कहाँ प्रिये हो।। रोज आती.....

जब खिली फूलो की गलियाँ मैं बहक जाता

एक अतिन्द्रिय गंध से अन्तस् महक जाता

याद से तेरी नशों में रेंगती बिजली

जैसे किंशुक वन बसन्तों में दहक जाता

है देह की आयी महक पर तुम कहाँ प्रिये हो।। रोज आती.....

अँखमिचौनी मत करो! मेरे प्राण रो देंगे

आ भी जाओ! पल सुनहरा भान खो देंगे।

तुम धड़कती जान में खुश्बू की हो पाँती

हो न कि थक-हार कर संधान खो देंगे

मै तुम्हारी राह तकता तुम कहाँ प्रिये हो। रोज आती.....

26.06.2025

3. आ भी जाओ

आ भी जाओ प्यार ने तुझको पुकारा है

हृदय ने फिर हृदय पर कि हृदय हारा है।।

लो नहीं कलि की परीक्षा, हृदय कोमल है

ओस की बूँदें न समझो, अश्रु का जल है

जब खिलेगी उपवनो में गंध भर देगी

निश्छल समर्पण का उसे संप्राप्त-सा बल है

आओ मधुकर सम्हल कर! पिच्छिल किनारा है।। आ भी .....

स्वर्नदी का मौज बहने लगी धरती पर

हम बहे जाते हैं मानो जलावर्ती पर

मंजरी के रजकणों का सींचना पल-पल

कल्पलतिका लतर जाये जैसे परती पर

प्रेम का दिव्यावरण स्वर्गों से प्यारा है।। आ भी.....

हे सजन! नस-नस में अमृत धार बहती है

हर चटख में कलि-हृदय में प्रीति रहती है

पल्लवोंके नर्त्तनों में स्वर्ण-घट खुलता

तेरी बातें कान में मधु डार कहती है

मत सिमट, खुल, सर्ग ने भुज को पसारा है। आ भी.....

24.05.2025

4. क्यों बुलाते हो

क्यो बुलो हो मुझे रितुराज के वन से

तुम महकते हृदय में मलयाद्रि-चन्दन-से।।

इस सुवासित हृदय को कैसे मैं समझाऊँ

विरह की सम्भावना से क्यों मुकर जाऊँ

मिलन-बिछड़न धूप-छाँही खेल प्रकृति में

मन से बढ़कर आत्मा तक फिर फिसल आऊँ

तन तिरोहित हो मगर मन व्यग्र क्रन्दन से।। क्यों.....

मैं तुम्हारे बाण से हूँ बिद्ध पंछी-सा

तिलमिलाता मत्स्य हूँ सन्नद्ध बंसी-सा

है तुम्हें आनन्द तो लीला में मैं शामिल

मैं तो लीलाकमल हूँ, हूँ स्वप्नदंशी-सा

खेल लो मुझसे कि जितना समझ नन्दन-से।। क्यों .....

फिर नहीं तुम प्यार के मनुहार से लड़ना

प्रेम की सत्प्रार्थना को व्यर्थ मत करना

प्रेम-मंदिर का दिया हूँ पूत रहने दो

वधिक-गृह की रोशनी से तुल्य मत कहना

और भी यह पूत होगा स्नेह-बंधन से।। क्यों.....

25.06.2025

5. मैं तुम्हारे गंध-वन में

मैं तुम्हारे गंध-वन में मुस्कुराता हूँ

मैं तुम्हारे छन्द-लय में गुनगुनाता हूँ,

मैं तुम्हारे झील में यों डूब जाता हूँ

दे तुम्हे आवाज खुद को भूल जाता हूँ।

तुम हमारी हर शिरा में तार बजती हो

तुम हमारे रोम के हर द्वार सजती हो,

तुम हमारे हृदय में स्नेहांे की धड़कन हो

तुम पसीने में सुगन्धि-सी लरजती हो।

मैं तेरे आलिंगनों में झूल जाता हूँ ।। मैं तुम्हारे.....

मैं पिपासित प्राण, तुम वारिद की हो पाँती

फूल की घाटी है मन, तुम गंध शरमाती

मैं शलभ गर तुम सुलगती काँपती बाती

मैं बहकता पवन, तुम डाली लचक जाती

मैं तुम्हारा स्पर्श पाकर फूल जाता हूँ।। मैं तुम्हारे.....

तुम नशीली चाँदनी हो मैं विरुध तनता

तुम फुहारे सावनी मैं इन्द्रधनु बनता

तुम सुनहरी सुबह हो, मै कमलवन खिलता

तुम सयानी रौशनी, मैं बिम्ब हूँ बनता

मैं मेरा अस्तित्व तुझमें भूल जाता हूँ।। मैं तुम्हारे.....

एषणाएँ साथ चलतीं पर तेरे आगे-

एक तेरी चाह बचती, सब तुरत भागे

जिन्दगी की राह सब मैं भूल जाता हूँ

एक तुम्हारी तृषा याकि तृप्ति ही जागे

मैं तुम्हारे प्रीति-सर के कूल जाता हूँ।। मैं तुम्हारे...

06.07.2024

6. ये तुम्हारे अधर.....

ये तुम्हारे अधर की लालइयाँ और

ये हमारे गुलाबी से दिन

कुछ तो अनहोनी करेगे, देखना है

मंजरी की खुश्बुएँ अनगिन।।

इन बसन्ती हवाओं में इन्द्रधनुषी गंध है

उपवनों की वीथियों मंे एक सधा अनुबंध है

अब न भूलेगा अहेरी उषा के पल-छिन।। ये तुम्हारे.....

साँझ स्लथ है गंध के बोझों को ढ़ो-ढ़ोकर

रोज रूठे, रोज टूटे प्यार के उलझन को रोकर

एक थकी-सी गंध लेटी हवा पर पट-बिन।। ये तुम्हारे.....

क्यो उसाँसें छोड़ती हैं उपवनों की डालियाँ

मस्त होकर झूमती है बाजरे की बालियाँ

क्या इधर से भी गई है यौवनी सापिन।। ये तुम्हारे.....

मैं निहारूँ रूप तेरा जल सरोवर में मगर

तुम न चाहे देख मुझको पास अपने भी अमर

तुम सलोनी शाम, मै विधु-किरण-पोषित तृण।। ये तुम्हारे.....

कुछ जवानी आग लाती है भरी-सी जिन्दगी में

कुछ जवानी मुस्कुराती है तरी-सी जिन्दगी में

कुछ जवानी लुभाती है प्रीति से मसृण।। ये तुम्हारे.....

20.05.2025

7. आवारा मन छाँव तलाश रहा

तपते दिन हैं, आवारा मन छाँव तलाश रहा।

जहाँ गुदगुदी माटी, गाछी गाँव तलाश रहा।।

रंग-बिरंगे परिधानों में रोपे सुन्दरियाँ

जहाँ हवा के संग नाचती-गाती हों परियाँ

जहाँ चहकती डालों पर नानावर्णी चिड़ियाँ

बूँदे नहीं, गिरा करती हों मोती-सी कणियाँ

राग भरे हर कंठों में ठहराव तलाश रहा।। तपते.....

जहाँ प्रथम वर्षा में सौंधी-सौंधी उठे गमक

धुल-धुल कर हर पल्लव कोमल फिर से उठे चमक

शीष उठाए दूर्वा तब पगडंडी जाए बहक

रह-रह करके सहलाती पूर्वाई आए सिहक

मन कर जाए बाग-बाग वह ठाँव तलाश रहा।। तपते.....

प्राती की हर पाँती में प्रार्थना-सने दुःख हो

साँझ की होती स्तुतियों में पीड़ा-हर सुख हो

हर मिलने आये बान्धव का हँसता-सा मुख हो

नेह भरे हर संबंधों में सच्चा-सा रुख हो

झुक जाए मन सहज भाव वो पाँव तलाश रहा।। तपते.....

झर-झर झरते झरने हो कि कल-कल सी नदियाँ

मन करता सौ बरस बिता दूँ अनगिन-सी सदियाँ

रिमझिम में आकाश स्वच्छ धुल जाए गंदगियाँ

हो नित स्वर्गिक स्वच्छ समीरण प्रमुदित जिन्दगियाँ

मुझको उस तट पर रहना है, नाव तलाश रहा।। तपते.....

29.08.2024

8. हम तेरी याद में

हम तेरी याद में हैं जगे रातभर

छत पे आने में तुमको लगे रात भर।।

मैंने आवाज़ दी थी तुम्हें जाने-मन

तूने मुझको कोई सिरफिरा कह दिया,

हमने हौले से पूछा कहीं चलते हैं

तू ने ना कर मज़ा किरकिरा कर दिया,

बात इतनी-सी थी मुझको देरी हुई

अब मनाने में तुझको लगे रात भर।। हम तेरी.....

तेरे अंदाज मे है शराबी नशा

तेरी आँखों में गहराई झीलों की है,

खूबसूरत तुम्हारा वदन चांद-सा

कुण्डलों की चमक ज्यों कंदीलों की है,

मैं हुआ जा रहा हूँ तुम्हीं पे फिदा

पास आने में मुझको लगे रात भर।। हम तेरी.....

अपना भी तो नसीबो-करम कम नहीं

तेरे जलवों की सोहरत बहुत जाने-मन,

प्यार में हौसला दो मुझे तुम ज़रा

तेरा एहसा न होगा बहुत जाने-मन,

तुम रहो सामने, मैं रहूँ देखता

ऐसे मंजर में हम-तुम जगें रात भरत।। हम तेरी.....

आदमी का ठिकाना क्या हो कब किसे

वक्त के हाथ की हम तो कठपुतलियाँ,

सावनी घन-घटा में चमकती हुई

प्यार तो है सुनहरी मगर बिजलियाँ,

जिन्दगी में इसे भी चमक जाने दो

घन-घटा-आने में भी लगे रात भर।। हम तेरी.....

प्यार का ही सफर, एक सच्चा सफर

बाकी सब झूठ है, खेल है जिंदगी,

प्यार पूजा है हम चाहने वालों की

प्यार है सृष्टि के हुस्न की बन्दगी,

फासले को चलो आज हम पाट दें

इस जगह आते-आते लगे रात भर।। हम तेरी.....

220.10.2024

9. अरे कान्हा!

अरे कान्हा! नफरतों से

जल रहा हर गाँव

जबकि पूजे जा रहे तुम

हर गली, हर ठाँव।। अरे कान्हा.....

वे तुम्हारे धेनुएँ

पथ हेरतीं हर ओर,

बह रहे हैं आँख से

पीड़ा-सने-से नोर;

गोपियाँ निर्वस्त्र होतीं

दुख नहीं है थोर

रक्त-रंजित शाम होती

रक्त-रंजत भोर।

मुष्टि हैं, चाणूर हैं

तेरा कहाँ है दाँव।। अरे कान्हा.....

कब तुम्हारी मोहिनी

वंशी सुनेंगे लोग,

कब तुम्हारे रास का

रस पा सकेंगे लोग,

कब तुम्हारी ज्ञान-गीता

में तिरंगे लोग,

गोधूलि बेला और

गायों से घिरेंगे लोग।

प्रीति भरिए, हिंस्र गतिविधि

पाएगी ठहराव।। अरे कान्हा.....

जो महाभारत रचाया

थम न पाया है अभी,

व्यूह-फँस कर पार्थनन्दन

बच न पाया है कभी,

अर्धसत्यों की परिस्थिति

झूठ है दिशि-दिशि सभी,

द्रोण की हत्या रूकेगी

तुम कि आओगे जभी।

वाणशय्या पर तड़पते

भीष्म तकते छाँव।। अरे कान्हा.....

तक्षकों से सज गया

फिर खाण्डवी भय लोक,

दे गया है वारणावत

भ्रातृहन्ता शोक,

फैलते आतंक को

लो रोक तो लो रोक,

कुरू- सभा में द्रौपदी

खींची गयी निर्धोक।

क्या बढ़ाओगे नहीं

फिर कंसहंता पाँव।। अरे कान्हा.....

26.08.2024

10. हवा जरा धीरे बहना रे

हवा जरा धीरे बहना रे!

लगे टिकोले झर जायेंगे

लोरी-छन्द जरा कहना रे!!

डाल उदासी रोयेगी फिर

दुखों की बदली आयेगी घिर

रोयी-रोयी सुबह दिखेगी

संध्या घर रो जायेगी फिर।

इक सदमा बागों पर होगा

ऐसे देश नहीं रहना रे।। हवा जरा धीरे.....

जरा झुलाना प्यार से इनको

वत्सल भरे दुलार से इनको,

ये नन्हें हैं, ये बच्चे हैं

क्या मतलब संसार से इनको।

इनकी दुनिया बाग-बगीचे

कोयल-कूक-कथा कहना रे।। हवा जरा धीरे.....

मंजरियाँ डालों पर छातीं

मधुकर पर चढ़ लक्ष्मी आती,

घर से अधिक सुहावन बगिया

जन-जन को है अधिक लुभाती।

मादकता जब तैर रही हो

हमको पीड़ नहीं सहना रे।। हवा जरा धीरे.....

घोघ भरे खेतों में फसलें

किसिम-किसिम के अन्न की नस्लें,

अब वसन्त सरसाया तुझ पर

जितना चाहो बाग तू हँस ले।

टेसू, फूल सजाती बगिया

मगर टिकोले ही गहना रे।। हवा जरा धीरे.....

14.04.2025

11. आज फिर.....

आज फिर परिहास ने तोड़ा हमारा दिल

प्रिय तुम्हारे प्यार के मैं हूँ कहाँ काबिल।।

तुम कलि प्रिय बाग की, मैं हूँ कँटीला तरू

लहलहाती भूमि शाद्धल तुम कि मैं हूँ मरू

तुम उषा उगती हुई, मैंे साँझ में दाखिल।। आज फिर परिहास.....

सुगंधों की आकृति तुम, मैं शिला-निर्मित

तुम वसन्ती आगमन, पतझार मैं विरमित

कोंपलों की सुगबुगाहट तुम, मैं निरस शापिल।। आज फिर.....

तुम रसों की वादियों में संचरणशीला

तेरे पट में आ छुपा आकाश भी नीला

मैं वो बाती मोम की चुकता है जो तिल-तिल।। आज फिर.....

यह समय भी तेरे पल्लू में लिपट रहता

स्वर्ग नद का नीर भी तब चाल पर बहता

मृगमरीची में फँसा मैं प्यास से तिलमिल।। आज फिर.....

जाओ नन्दनवन में भोगो स्वप्नशायी सुख

मेरे हिस्से छोड़ दो भौतिक धरा के दुःख

गंध के बादल चढ़ो, मुझको धरा हासिल।। आज फिर.....

22.05.2025

12. अतिशय दूर चले जाओ पर

अतिशय दूर चले जाओ पर

स्नेही जन तुम याद रहोगे,

खट्टे-मीठे तिक्त-कटु संग

स्मृतियो के रूप धरोगे।।

जाने को तो चले गए पर

स्मृतियों को संग मिटाते,

बचपन, युवा, प्रौढ़ता के संग

सुबह, दोपहर चुहल की रातें

ले जाते संग, दर्द न होता

रह-रह मन-उन्मथित करोगे।। अतिशय दूर.....

उल्लासों को संग लिवाकर

अंतरिक्ष में जा बैठे हो,

अमिट सफलता के पग चलकर

नखत-लोक में क्यों ऐंठे हो

इतने तो तुम क्रूर नहीं थे

मित्र! मित्रता याद करोगे।। अतिशय दूर.....

दुधियायी-सी इन्दु-रश्मि में

न्हाई हुई भली थी यारी,

निश्छल, निर्मल हो जाती थी

स्मृतियों की बातें प्यारी

कुमुद-कोष कुछ खुल जाते थे

अब कैसे रह-रह विहँसोगे।। अतिशय दूर.....

दोनों ही ही थे कर्त्तव्यों के

पथ के पथिक, निरन्तर चलना

कहाँ हुआ करता था अक्सर

हम दोनों का आपस मिलना,

पर मन में विश्वास अडिग था,

डिग तुम गए, कहाँ विलमोगे।। अतिशय दूर.....

एक मित्रता के धागे से

बँधे हुए हम दोनों ही थे,

अलग-अलग पथ के अन्वेषी

हृदय एक हम दोनों ही थे

मुझको पता नहीं था चुपके

तारापथ को यो धर लोगे।। अतिशय दूर.....

प्रिय मित्र हेमचन्द्र ठाकुर के निधन पर!

11.11.2024

13. अरी जिन्दगी

अरी जिन्दगी! मैंने तुझसे

जब-जब रार किया है

पीछे से छुपकर तुमने भी

तब-तब वार किया है।।

मैंने अपने विजय-गर्व में

तेरी किया उपेक्षा,

जीवन-नियमो को कर खंडित

रच ली नई समीक्षा,

तूने तब-तब बाज-चोंच से

मार शिकार किया है।। अरी जिन्दगी.....

यौवन का उन्माद बहाकर

ले जाता सरिता-सा,

हर पल खड़ा किया करता है

जीवन में अरिता-सा,

जीवन की धारा को तब-तब

क्षत शतवार किया है।। अरी जिन्दगी.....

जब-जब मैंने सजबाई है

फुलवारी सपने की,

महकाई है क्यारी-क्यारी

खुशियों से अपने की,

तूने जीना किया विवादित

तिल का ताड़ किया है।। अरी जिन्दगी.....

मैं उत्सवधर्मी स्वभाव से

रचता रहा महोत्सव,

मैं संघजीवी एक साथ मिल

ढूँढ़ रहा नित उत्सव,

बढ़ते उत्साहांे को तूने

बढ़ तार-तार किया है।। अरी जिन्दगी.....

मैंने विजयोल्लासों में

कुछ तो अनीति कर डाले,

सोचा होगा आसमान में

स्पन्दन तनिक उड़ा लें,

धुरी पकड़ कर स्पन्दन की

भू पर क्यों मार दिया है।। अरी जिन्दगी.....

मैंने तो चाहा था फूलों भरा-

हुआ उपवन हो,

मधु बरसातंे, हरषाती कृषि,

रिमझिम पावन सावन हो,

तूने ऐसे क्षण मेरे-

हाथों झंखाड़ दिया है।। अरी जिन्दगी.....

नहीं हमेशा स्थितियो का

अनुकूलन होता है,

जहाँ बहाने जाओ गंगा

बहता एक सोता है,

विजयोत्सुक मन को री पगली!

तुरत पछाड़ दिया है।। अरी जिन्दगी.....

क्या जीवन है हार-बैठकर

केवल करें प्रतीक्षा,

भूल जाय पुरूखों से पायी

हुई अजेय वो दीक्षा

तूने संबंधों में असमंजस

का संसार दिया है।। अरि जिन्दगी.....

14. फिर हो जायेगा शायद रण

फिर हो जायेगा शायद रण

खिंचीं करवाले हैं,

राजनीति की आँखो पर

मकड़े के जाले हैं।।

अहंवाद का अंधापन

हर कौम पे छाया है,

शस्त्र जुटाकर हर शासक

चढ़ व्योम पे आया है,

शान्ति ने चखकर स्वाद खून का

नख-दत्त निकाले हैं।। फिर हो .....

पूरा विश्व है खून बहाने को

मचला जाता,

एक हिंःस्रः पशु आँखों में

उन्माद लिए आता,

चबा-चबाकर मानवता को

खाने वाले हैं।। फिर हो जायेगा शायद.....

हिंसा को दो नाम धर्म का

यह चतुराई है,

विष से अधिक अमृत बॉटों

तो यही बड़ाई है,

पर सबके पीछे चलते

अब गरल निराले हैं।। फिर हो जायेगा शायद.....

शान्ति-स्थल को सिर्फ विवादों का

घर कर डाला,

कई बार तो धर्म-जाति का पक्षी

इसका आला,

लघु राष्ट्रों पर काली छाया

एटमी उजाले हैं।। फिर हो जायेगा शायद.....

मानवता को अगर बचाना

बड़े करो डैने,

दानव को यदि पड़े हराना

नख-दत्त करो पैने,

हिंसा बहुत उदंड

आम जन भोले-भाले हैं।। फिर हो जायेगा शायद.....

बढ़ी आ रही है पिशाच की

लम्बी-सी छाया,

यहीं कहीं पर होगी उसकी

बड़ी विकट काया,

विश्वनायकों साधो

गेंद अब तेरे पाले हैं।। फिर हो जायेगा शायद.....

04.10.2024

15. तुम भी आओ वहाँ

तुम भी आओ वहाँ, हम भी आते वहीं

छत पे बातें करेंगे चलो रात भर,

चान्दनी में नहायेंगे हम प्यार को

हँस-हँसाया करेंगे चलो रात भर।।

वक्त को रोक देंगे चलो प्यार से

इस हवा को कहेंगे बहो प्यार से

चान्द को सामने रख निहारेंगे हम

दूर संवाद होगा जो संसार से,

हम मुहब्बत की दुनिया में खो जायेंगे

दिलनुमायाँ करेंगे चलो रात भर।। तुम भी आओ.....

कुछ हसीं ख्वाब हमने सँजोये रखे

कुछ हसीं बतकही के इरादे भी हैं,

कुछ मनाने की चाहत मुझे भी तो है

कुछ सताने के तेरे इरादे भी हैं,

दोनों की हर खुशी आज मिल जायेगी

भ्रम मिटाया करेगे चलो रात भर।। तुम भी आओ.....

अपने भुज पाश में देह को खींचकर

प्राण और देह से एक हो जायेंगे,

प्राण की लय में तिरते रहेंगे सतत

प्रेम की लय में अस्तित्व खो जायंेगे,

कुछ बचे तो चलो बात कर पाट दें

कुछ गँवाया करेंगे चलो रात भर।। तुम भी आओ.....

20.10.2024

16. सपनों की दीवारों पर.....

सपनों की दीवारों पर

परछाई दिखती है,

निर्मल जलवाले घाटों पर

काई दिखती है।।

सधी कल्पना के आँगन

जंगल उग आए हैं,

शब्दों की क्रीड़ा में भी

छल-बल जग आए हैं,

रस परिपाक बिठाने में,

चतुराई दिखती है।। सपनों की दीवारों पर.....

करना जो था वही हुआ क्या?

सख्त जमीं निकली,

हर सुविज्ञ जन में आखिर

दो-चार कमी निकली,

कर्त्तव्यों की आँच मंद

सचाई दिखती है। सपनों की दीवारों पर.....

एक प्रपंच का चँदवा फैला

हर सिर के ऊपर,

अन्दर खाली महल भूतहा

आते हैं छू-छू कर,

ब्रह्म पिचासों की नगरी

बनवाई दिखती है।। सपनों की दीवारों पर .....

आराधन में सभी लगे हैं

घूसतन्त्र हो सिद्ध,

फँसी गाय के मरने तक हैं

ताक रहे सब गिद्ध,

पूर्वा के मौसम में यह

पछवाई दिखती है।। सपनों की दीवारों पर .....

क्या से क्या हो गया जमाना

मैं तो दग्ध हुआ,

हर कोई अतिवाद में पड़कर

दुखी-विदग्ध हुआ,

सपने टूटे, निष्ठा टूटी

हकलाई दिखती है।। सपनों की दीवारों पर.....

अपने भी कुछ याद करो

बीते युग, गौरव के,

कि केवल बचने दोगे सब-

दिन-दिन ये रौरव के,

घोर पतन है, नहुषों की

अगुवाई दिखती है। सपनों की दीवारों पर.....

01.09.2024

17. मैं वह ढूँढ़ रहा हूँ

मैं वह ढूँढ़ रहा हूँ,

अपना भोला-भाला गाँव,

जहाँ प्रेम से सने नयन थे

हर जन के, हर ठाँव।।

मैं तो ढूँढ़ रहा हूँ दादी की

मुस्क्याती आँख,

ढूँढ़ रहा हूँ नन्हीं बहना

फुर्र हो जाती पाँख,

ढूँढ़ रहा हूँ दादाजी की

प्राती में हरि नाँव।। मैं वह ढूँढ़ रहा हूँ .....

मैं तो ढूँढ़ रहा हँू निश्छल

स्नेहो के वातास

मात-पिता की आँखों में

ढुल आई निश्छल आस,

चाचा का गौरव, परदादा

के नमनीय-से पाँव।। मैं वह ढूँढ़ रहा हूँ .....

पर्व-त्योहारों में छलका

आँखों का वह उल्लास,

हरी चादरों के ऊपर

चन्दा का विमल उजास,

बाग-बगीचे की निर्मल

बतियाती पगली छाँव।। मैं वह ढूँढ़ रहा हूँ .....

ढूँढ़ रहा हूँ घर-आंगन

अरिपन के ढ़ँवरे चित्र,

ढूँढ रहा हूँ सोते में

पंडुक के शब्द विचित्र,

प्रोषित-पतिका भौजी के

कागों का काँव-काँव।। मैं वह ढूँढ़ रहा हूँ .....

सारे सहज चित्र गायब हैं

छल सब पर हावी,

पता नहीं, वह गाँव कहाँ है

आगे क्या भावी

फेंक रहे हैं एक से बढ़कर

एक घिनौने दाँव।।

मैं वह ढूँढ़ रहा हूँ .....

01.09.20254

18. भोर देता बांग

भोर देता बांग

उठना कृषक

अब तो देर होगी,

वायु का पथ

छोड़ हट जा

गंधवह को अवेर होगी।।

ऊँघते थक सो गए

तारे जगे

निशिभर अव्याहत,

लीपती है उषा

चौका कुंकुभी

जल से अनाहत।

कर्म-ऋषिका पंछियों को

शीलोच्छ्र की

अब देर होगी।। भोर देता बांग.....

धरा को शीतल

बनाने बादलों के

झुण्ड आये,

डालियाँ पुष्पार्ध्य दे

हैं बद्धपंक्ति

सिर झुकाये।

उदित होंगे अरुण

चारों ओर किरणें

घेर होंगी।। भोर देता बांग.....

स्नान कर बटु

उठ गए

सस्वर ऋचा का पाठ होगा,

मस्जिदों में अजान का

कुछ अलग

इनसे ठाठ होगा।

वंशबाड़ी में

खगों की कचबची

ध्वनि फेर होगी।। भोर देता बांग.....

अलस का केंचुआ

हटा कर

वृद्ध, बालक, युवा जागे,

संतृप्त रजनी

श्याम-पट-स्लथ को

समेटे फिरे भागे।

कौश किरणें

खिड़कियों से झाँकती

बेर-बेर होगी।। भोर देता बांग.....

19. जिन्दगी शाम है

शाम तन्हाइयों का ही

एक नाम है,

जिन्दगी क्या है

बस शाम ही शाम है।।

वक्त की फिसलनों पर

चढ़ी जिन्दगी,

तेज रफ्तार से

बह रही जिन्दगी,

खाइयों की तरफ

फिसलनें तेज है,

नासमझ मुस्कुराती

रही जिन्दगी,

पल में मिट जायेगी

पल में पिट जायेगी

जो बचेगा वो तेरा

फ़क़त नाम है।।

शाम तन्हाइयों का .....

उपवनों में खिले

फूल है जिन्दगी,

यह प्रकृति की बड़ी

भूल है जिन्दगी,

है बहारों में महकों के

बहके कदम,

पतझरों की उड़ी

धूल है जिन्दगी,

स्वप्न में है रुदन

सत्य में कुछ नहीं,

राख से सिर उठा

एक बदनाम है।। शाम तन्हाइयों का .....

कर सको तो चलो

प्यार करते हैं हम,

राह में जिन्दगी भर

मचलते हैं हम,

प्यार ही सत्य है

प्यार ही राग है,

प्यार में तो पतिंगों-सा

जलते हैं हम,

खुद लुटा दो, न लूटो

यही प्यार है,

शेष रहता बचा एक

बस काम है।। शाम तन्हाइयों का .....

एक नदी बह रही

हम मछलियों-से हैं,

राजमार्गों से फूटी-सी

गलियों-से हैं,

इस अनस्तित्व में

रूप अस्तित्व के,

एक सरोवर में हँसने को

कलियों-से हैं,

कब गयन्दों की क्रीड़ा का

हो भाग हम,

अब महक लो जरा

नाश परिणाम है।।

शाम तन्हाइयों का .....

25.11.2024

20. दुनिया कितनी छल-बल वाली

दुनिया कितनी छल-बल वाली

सच सिसकी भरती

ईमानों की कसम-पे-कसम

बात-बात करती।।

अगर कहो बेईमान देवता

रूठा करते हैं,

गाँव सिमाने स्थान देवता

बैठा करते हैं।

जनता चरणोदक-तुलसी पे

भरोसा है करती।। दुनिया कितनी .....

सज्जन को जड़भरत, ठीठ को

बुद्धिमान कहते,

सौ के गला काटने वाले को

महान कहते।

सीता को निर्वासित करके

अयोध्या है रहती।। दुनिया कितनी .....

हर महफिल में घूरती आँखें

झेल रही दुरपता,

सत्य-शीलवाली युवती पर

अश्लील घिरी विपदा

झूठे की जय, सत्य पराजित

रीति रही चलती।। दुनिया कितनी .....

02.01.2025

21. प्यार हमारा

इतना तो कमजोर नहीं था

प्यार हमारा कैसे भूले,

प्रीति का पल-पल था वृन्दावन

यादों के मधुमय वे झूले।।

हम दोनों ही भूल गए थे

अस्तित्वों को प्रणय धार में,

सम्मोहित हो चले कहीं थे

सपनीली आती बहार में।

फिर क्या हुआ तेरी धारा

बह चली कहीं, सारा रस भूले।। इतना तो.....

अब भी गरमाहट राखों में

छूना जरा सम्हल कर प्यारे,

जाना सम्हल, हृदय को थामे

चुपके-चुपके जमुन किनारे,

गाती लहर मिलेगी अब भी

तुम्हें कदम्ब मिलेंगे फूले।। इतना तो .....

प्रेमासव तेरा स्थायी नश-नश में

तैरा करता है,

तेरा स्मरण अनादि प्रेम के

अन्तस में डेरा करता है,

अमर प्रेम में अमर हुए हम

चलो संग आकाश को छू लें।। इतना तो.....

उठे देह से, हुए हृदय हम

उड़े गगन तक वायु से हल्के,

फिर रह गए किरण प्रोज्ज्वल

ज्योति-कलश से पल-पल छलके,

हम अपराजित, हम अविभाजित

हम शाश्वत प्रेमी रस कूले।। इतना तो.....

06.01.2025

22. प्यार तेरा ढ़ेर सारा

समय कितना स्वल्प है

और प्यार तेरा ढ़ेर सारा,

हम वो बच्चे हैं जिसे कुछ-

चाहिए सारा का सारा।।

फूल की महकें समेटूँ

या बाग का पतझार,

प्यार में रूठूँ कि कर लूँ

इक तेरा मनुहार।

या समेटूँ नेह-भीने

मन को जो तूने पसारा।। समय कितना .....

तुम जो मुस्काती हो झरते

हरसिंगारी फूल प्यारे,

तुम बहुत भाती हो तब

आँचल छिपाती दीप न्यारे।

दीप्ति-नहाई मूर्ति लगती

साँझती तुलसी का चौरा।। समय कितना .....

गंध ले वह गंधवह

गुजरा तुम्हारे पास से जब,

और भी वह महक उट्ठा

भर गया था उजास से तब।

मैं तुम्हारे रूप-वन में

चकित-सा भूला-सा भौंरा।। समय कितना .....

हो मेरा विस्तार जितना

अल्प हो जाता हूँ तुमसे,

मौन के संवाद में मैं

क्षुद्र हो जाता हूँ तुमसे।

मैं तेरे विस्तार में घुर

आ रहा फिर-फिर दुबारा।। समय कितना .....

24.08.2024

23. साँझ का दीपक

साँझ का दीपक लुटाता

रोशनी की विमल किरणें,

अँधेरे को दूर करने

पथ हमार सुलभ करने।।

जब तमस जीवन सुलभ को

जटिल कर जाता घनेरे,

हर गली, हर मार्ग पर

छाते अपावन जब अंधेरे,

एक चुटकी रोशनी पावन

चली आती है भिड़ने।। साँझ का .....

मंगलाशा की सुखद

अनुभूतियाँ उसमें छिपी हैं,

निराशा के अंध से लड़

रश्मि-रेखा इक दिखी है

तमस से ज्योतिर्किरण का

सनातन है द्वन्द्व चलने।। साँझ का .....

झूठ दिखता है सबल पर

सत्य कर जाता पराजित,

विश्वव्यापी तमस में

दीपक विहँसता सत्यभ्राजित

लड़ रही हो दिव्यता

क्या तमस नव रूप धरने।। साँझ का .....

अचल के आगे विचल का

नाशवानी रूप ही है

तमस के आगे किरण का

भासता सत् रूप ही है,

ज्ञान की निर्मल शिखा

आती है जीवन धन्य करने।। साँझ का .....

12.11.2024

24. मत करो इतनी कृपा

मत रिझाओ यों मुझे

आँखों से बह जायेंगे आँसूँ,

मत बनाओ मीत गहरे

फिर छलक आयेंगे आसूँ।।

मत करो तुम प्यार इतना

जो सम्हाले जाय ना फिर,

मत बिगाड़ो आदतें-

मेरी, छुड़ाए जाय ना फिर,

मुस्कुराती होंठ का चुम्बन

न दो, आयेंगे आसँू।। मत रिझाओ.....

मत दिखाओ स्वप्न सुख के

मैं निकम्मा हो न जाऊँ,

प्रेम-घाटी में उतर कर

वादियों में खो न जाऊँ,

जब पड़ेगा कर्म का बोझा

छलक आयेंगे आसूँ।। मत रिझाओ .....

हौले-हौले जिन्दगी में

जब उतरता प्यार का धन,

मंद-मंथर मास मधु में

सुरभि भरता फूल का वन,

तब सुलगती आँख में

हौले से ढुल जायेंगे आसूँ।। मत रिझाओ.....

बिन लिए ही दे रही हो

प्यार अनगिन बाँह में भर

मैं कि आनंदातिरेकों में

कहीं बह जाऊंगा तिर,

मत करो इतनी कृपा

रोना बिसर जायेंगे आसूँ ।। मत रिझाओ.....

23.11.2024

25. अब हमारे प्यार का

अब हमार प्यार का

कमल मलान हो गया,

रखे किसी किताब में

कुसुम समान हो गया।। अब हमारे .....

अब नहीं है स्वप्न में

उतर रही परी कोई,

अब नहीं है आ रही

जमीन भी हरी कोई,

अब कंटीले रास्तों

भरा जहान हो गया।। अब हमारे .....

पंख फड़फड़ा रहा है

मन उड़ान के लिए,

आत्मा तड़प रही है

आसमान के लिए,

पंख तो है दूर-दूर

आसमान हो गया।। अब हमारे .....

आँधियों में मिट रहे

चमन के फूल रो रहे,

सह न पाए जो थपेड़े

वो जमीं पे सो रहे,

मै विवश निहारता रहा,

मसान हो गया।। अब हमारे .....

फूल थे जो शूल हैं

कबूल थे जो भूल हैं

अमिय की धार थी कभी

गरल के वे ही भूल हैं,

कभी थी जान अपनी वो

किसी का प्राण हो गया।। अब हमारे.....

बरस रही थी सावनी घटा

हमारे द्वार पर,

खिले-खिले बसन्त थे

कि मौसमे-बहार पर,

खिजाँ है, खार प्यार अब

विरह का गान हो गया।। अब हमारे.....

न बोल है न चाल है

मजाक बन के रह गया

आँसुओं की धार में

श्रृंगार सभी बह गया,

मैं अजान राह का

दिया निशान हो गया।। अब हमारे .....

06.10.2024

26. राम तुम्हारे आदर्शों के .....

राम तुम्हारे आदर्शों के

हत्यारे फूले-फलते,

जीवन उनके राजमार्ग पर

फिर भी हैं सुख से चलते।। राम तुम्हारे .....

आदर्शों की सीता का

वनबास आज भी होता है,

राम महल के अन्तःपुर में

छुपकर क्षण-क्षण रोता है,

अब भी कुमति रजक की बातों से

नृप-धर्म भी हैं पलते।। राम तुम्हारे .....

क्यों अनीति का रावण हरता

नीति-निपुण सुकुमारी को,

बन्दी गृह में जन्म क्यों लेना

पड़ता गोप-विहारी को

शबरी कहीं छली जाती है

व्यंग्यवाण चलते जलते।। राम तुम्हारे .....

नहीं धर्म का आश्वासन है

नहीं कर्म का आराधन

सिर्फ जुटाते अधिकाधिक

भौतिकवादों के संसाधन,

निष्ठा की तो बात है झूठी

कुछ रह जाते कर मलते।। राम तुम्हारे .....

राम-राज्य का सपना भर है

राज्य चलाना हुआ कठिन,

एक-एक पल भारी लगता

सुखद, शान्त कट जाये दिन,

षड्यंत्रों की कमी नहीं हैं

बुनियादी परदे हिलते।। राम तुम्हारे .....

वचन भुलाना मूल्य बन गया

वचन निभाना नादानी,

सतकर्मों के ऊपर से

अपकर्मों का बहता पानी,

संबंधों की हुई तिलांजलि

एक-दूजे को नित छलते।। राम तुम्हारे.....

हे राघव! भाई से भाई

रोज लड़ाई करते हैं,

संसद में जनता के प्रहरी

हाथापाई करते हैं,

झूठ पे झूठ के दागे गोले

गिर-गिर कर नहीं सम्हलते।। राम तुम्हारे .....

07.10.2024

27. यह बसन्त

मन-भावन पावन यह बसंत

पुलकित हैं सारे दिक्-दिगन्त।।

मुकुलित रसाल-मंजरी-स्तवक

है शिखा-शिखा पर मधुर पुलक

नर्तित पल्लव, भ्रमरों की बहक

मन में तरंग क्या वृद्ध, युवक

रंगोत्सव प्रकृति में, नहीं अन्त।। मन-भावन.....

चिड़ियों की चह-चह में है राग

प्रतिपुष्प लरजते-मधु-पराग

खिल गए वनौषधियों के भाग

सर्वत्र ताम्ररस का सुहाग

लगता बहका-बहका अनन्त।। मन-भावन .....

पुलकित है सारा यह समाज

एक आमंत्रण, ढ़ह रही लाज

है हवा बहकती गंध-ब्याज

मन विगलित विरहिणियों के आज

कब तक आयंेगे गए कन्त।। मन-भावन .....

कोयल की कूक कहीं उठती

डफ की थापें हैं कही बजती

वनराजि मंजरी से सजती

षट्पद की पाँत भली लगती

सब भूल गए पर-अपर पंथ।। मन-भावन .....

09.03.2025

28. मत आग लगा

जितनी भी तुम आग लगा

सावन हरियाली लायेगा,

आसमान में दागो गोले

पर बादल मँडरायेगा।।

मृगतृष्णा की रचो भूमि

सारे मृग छले न जायेंगे,

कुछ तो होंगे सहज सरल

तानों पे रीझ के आयेंगे।

मिट्टी बना रहे इनसाँ

मिट्टी से ही जग जायेंगे।। जितनी भी .....

हथियारों को चमकाने में

नरबलि नहीं जरूरी है,

हो गर तुम इनसान बताओं

ऐसी क्या मजबूरी है।

अगर रचोगे मरूभूमि

शाद्वल फिर कब लहरायेगा।। जितनी भी .....

सविता देगा जब प्रकाश

बादल वर्षा कर जायेगा,

शिशिर ठिठुर, आकर बसन्त

क्यारी-क्यारी महकायेगा।

हवा थपकियाँ देगी जब

सपनों में जग खो जायेगा।। जितनी भी .....

भस्मासुर मत बनो, न लूटो

स्वप्न किसी कोमल शिशु के,

अनुपम कला-कृति मत तोड़ो

कालजयी कृति हैं विशु के।

अर्थवाना रहने दो जग को

वरना तू पछतायेगा।। जितनी भी.....

28.03.2025

29. गंध हवा लाती जब

गंध हवा लाती जब

कोयल शरमाती जब

ये गुलाब गंधों से

रोज लिखे पाँती तब।।

रातों की रानी के महके जब अंग-अंग

बेला-चमेली भी महके जब संग-संग

महुए और कटहल की गंध महक जाती तब।। गंध हवा.....

शेफाली आँचल-सुगंध बिखराती है

जूही-अलबेली भी खूब इतराती है

धक्-धक्-सी विरही की धड़के है छाती तब।। गंध हवा.....

बागों ने इत्रों से खूब ही नहाया है

पूरब ने पूर्वैया छनन-छन बहाया है

आमों के मज्जर की गंध ललचाती तब।। गंध हवा.....

चम्पा ने तन पर फुलेल ही उड़ेल लिया

उपवन भी रंगों की होली ही खेल लिया

अरहुल, पलाश, अमलतास-कलि भाती तब।। गंध हवा.....

14.05.2024

30. उमड़ आई सावनी घटा

उमड़ आई सावनी घटा

शिखरों पर मौसमी छटा।।

पल्लव से पल्लव की कनफुसकी हो रही

फूलों से फूलोंकी बढ़ मुस्की हो रही।

आकर बदमाश हवा सबको झकझोर गई

बारिश की बूँदें भिंगोकर रसबोर गई।

उल्लास डाल-डाल सब ठौर ही पटा।। उमड़ आई.....

स्वर्णातप उठता जब स्वर्णिम-सी बूँद-बूँद

कुमुदिनी लजाकर के लेती है आँख मूँद।

सुरघनु के मुकुट पहन शिखर-शिखर डोले हैं

डालों की बाँह पकड़ खंजन रस घोले हैं।

क्या ढूँढ़े जुग्नू जब फैली रजनी की जटा।। उमड़ आई.....

घिड़ गई है खेतों में कजरी की तान नयी

व्यापारी सावन की खुल गई दुकान नयी।

रिमझिम-सी वारिश में स्नेही जन मचले हैं

लह-लह-सी झूम रही हरी-भरी फसलें हैं।

टर-टर सुख बाँट रहा मेंढ़क दो दल में बँटा।। उमड़ आई .....

15.05.2024

31. कातिक का मास

कातिक का मास शरद हास लिए आया है

कतिकी से जीवन उल्लास लिए आया है

मन का चकोर चाँद तालों में देख मुदित

सिहकी पूर्वैया धानशीश थिरक आया है।।

चान्दनी में शीशों पर ओसों के झरे हीर

तालों के दर्पण में माछों से हिले नीर

काँसों को शिशु-सा झुलाता हौले समीर

सरिता-जल छवि देखे तरूओं की पाँत तीर

खेतों में सुनहरे-से रंग छिलक आया है।

सिहकी पूर्वैया धान-शीश थिरक आया है।। कातिक का मास

खेतों में सिरहन-सी एक लहर तैर गई

सोए में गालों पर श्रीश कलि फेर गई

नीहारी चादर तन साँझे-सबेर गई

खिखियाती खिखिर मेड़ों से कई बेर गई

शारदी वयसंधि-काल खूब झलक आया है।

सिहकी पूर्वैया धान-शीश थिरक आया है।। कातिक का मास

नीड़ों में सिपटी-सी झाँकती गोरैया है

हौले से सिहक कर डुलाती पूर्वैया है

मन ऐसे झूमे कि झूमै कन्हैया है।

खुशियाली नाचे सर्वत्र ताता थैया है

लेकिन उदास कमल-पुष्प मलक आया है।

सिहकी पूर्वैया धान-शीश थिरक आया है।। कातिक का मास

32. जिन्दगी तमाम हुई

मैं तार-तार हो गया, नयन मेरा भिंगो गया

जिन्दगी तमाम हुई तो जहान रो गया।।

आग भी हुई कभी कि राग भी हुई कभी

मौसमों के पुष्पगंध-भाग भी हुई कभी।

चिराग-सी जली कभी तो नाग भी हुई कभी

चाहतों में यह कभी विहाग-सी हुई कभी

दिल मचल-'मचल गया कि तन-मशान रो गया।। जिन्दगी .....

मगन-मगन था प्यार में, वो एक थी हजार में

साँकलें जो खुल गईं महक रही बहार में

पात-पात सज गए महक चढ़ी बयार में

शब्द-शब्द गूँजने लगे किसी पहाड़ में

वह मगन थी जिस समय कि काल-प्राण सो गया।। जिन्दगी .....

रोम-रोम बोलते हैं प्यास प्यार-प्यार है

आज इसको चाहिए कई-कई दुलार है

फूल-फूल में थकन है, गंध ही फरार है

एक फूल पर गिरे मधुप-मधुप हजार हैं

एक उजाड़ आ गया कुसुम मलान हो गया।। जिन्दगी .....

मौत की पहाड़ियो में गूँजती आवाज है

आज यह कली गिरी तो कल तुम्हीं पे नाज है

जिन्दगी का सत्य एक मौत, बेआवाज है

यह रहस्य सृष्टि का है, काल का ये राज है

उमड़-धुमड़-बरस निरभ्र आसमान हो गया।। जिन्दगी .....

बूँद-बूँद को धरा तरस रही है प्यास से

ताकते हैं जीव आसमाँ की ओर आस से

वृक्ष भी तड़प-तड़प के ले रहे उसाँस-से

रात चांदनी गई है सो के उसके पास से

आस-वास छूटकर मृदा समान हो गया।। जिन्दगी .....

इस धरा पे जन्म की बधाइयाँ भी हो रहीं

इस धरा पे मृत्यु की अँगड़ाइयाँ भी हो रहीं

सत्य और असत्य में लड़ाईयाँ भी हो रहीं

ठोस की जमीन पर परछाइयाँ भी हो रहीं

कहीं खुशी कहीं है गम समान मान हो गया।। जिन्दगी .....

शब्द रच रहा हूँ मैं शब्द के विधान पर

उड़ा रहा हूँ कल्पना के काक मैं मचान पर

मैं सजग, हुआ भ्रमित हूँ बाँसुरी की तान पर

वह चतुर है चित्रकार बैठा आसमान पर

तुच्छ हम कलाकृति, सृजक महान हो गया।। जिन्दगी .....

12.06.2024

33. प्यार से बढ़कर कुछ भी नहीं है

प्यार से बढ़के कुछ भी नहीं है

प्यार का रोना इस बस्ती में

इनसानों की प्यार जरूरत

आँख भिगोना क्यों बस्ती में।। प्यार से .....

मुस्कानों पर तंज कसेंगे

अरमानों पर लोग हँसंेगे

छलके आसूँ पलकों-पलकों

चकित भाव मन से हुलसेंगे

नेह की होर तोड़ने वाले

नेह-कथा कहते बस्ती में।। प्यार से .....

मन मानव की सच्ची थाती

स्नेह-कथा पर कब है भाती

तिर्यकता ही जब-तब आती

स्नेह-पुलक तज निन्दा लाती

फूलों की गंधों की थिरकन

कम को भाती है बस्ती में। प्यार से .....

स्नेह जलन को दूर है करता

मन में नवल सुगंध है भरता

ईर्ष्या मन में लाती जड़ता

समय-समय पर रोना पड़ता

फिर भी मनुज ईर्ष्यगंधों को

चहुँदिस फैलाता बस्ती में।। प्यार से .....

प्यार मे मनुज हुआ है कृपण-सा

द्वेष की उठती गंध है व्रण-सा

स्नेहिल मन का लेता प्रण-सा

प्रण होता है लोपित क्षण-सा

दुनियाबी में उलझ-उलझ कर

विकृत सब मन इस बस्ती में।। प्यार से .....

13.06.2024

34. प्यार

अंगारे का धर्म जलाना

जल का शीतलता पहुँचाना

प्यार में जितना जलते जाओ

प्यार को उतना ही है पाना।।

प्यार जलन है, प्यार है शीतल

प्यार गगन है प्यार धरती तल

प्यार भजन है, प्यार मनन है

ऊर्ध्वगमन औ प्रिय जगती तल

प्यार अगर वायव्य गगन तो

प्यार हृदय में उतर है जाना।। प्यार में .....

प्यार है मौसम की अँगड़ाई

प्यार है कोमल-मन-परछाई

प्यार है देना, केवल देना

प्यार है प्रिय की सतत बड़ाई

प्यार है चलना असिधारों पर

निरवरोध मिलन का आना।। प्यार में .....

एहसासों की प्यार महक है

मन का केवल बहक-बहक है

मन की ज्योति जलाता है तो

प्यार में शत चिड़ियों की चहक है

प्यार है डालों की एक टेसू

टेसू वन का सुलग है जाना।। प्यार में .....

प्यार है लोरी प्यार है निंदिया

प्यार किसी माथे की बिंदिया

प्यार सजगता, प्यार प्रतिज्ञा

प्यार कर्मपथ हमे है दिया

प्यार में एक मसृण अनुशासन

प्यार को सुलग-सुलग अपनाना।। प्यार में .....

जंजीरों की नहीं खनक यह

पायल की भी नहीं झनक यह

प्यार है नूपुर की रूणझुन-सा

आवारा भौरों की सनक यह

प्यार है वंशी की सुरलहरी

राधा-मोहन का नियराना।। प्यार में .....

35. शिखरांे का बहार

शिखरों के काँधांे पर बादल के छौने हैं

खिल आये फूलों की घाटियाँ खिलौने हैं

ठठा-ठठा हँसकर जब ठनके आ जाते हैं

सिहर-सिहर शिखरों पर मोती झर आते हैं

तब बहती गंगा की धार

खिलखिलाता घाटी में प्यार।।

शिखर-शिखर पसमीना चादर-सी ओढ़े है

गुनगुनी-सी धूपों की किरणें भी लोढ़े है

घाटी भी अलसायी ऊंघे औ पौढे है

वायु तभी आकर के पात को हिलोड़े है

महक जाती नदिया कछार

उफनाती उर्मीली धार।।

खूब लदक आयी बुरांशों की लचक डाल

लाल-लाल चूनर है लाल-लाल दिव्य शाल

फूलों की घाटी भी रंग आयी रंग डाल

बर्फीले शिखरों के हुए किरण-लाल-गाल

बर्फीली फागुनी बहार

कि खिल आया सारा पहाड़।।

14.06.2024

36. साँझ

विरह-सी श्यामल दुपट्टा ओढ़ आयी साँझ

कुछ दिए में रौशनी, कुछ में समायी साँझ।।

दीवटों में साँझ की कालिख लगी

झुटपुटे में श्रृंगाली मौसम जगा

स्याह चादर गाँव पर फिर तन गयी

डर ओसारे में खड़ी, साहस डिगा।

अब न बच्चे खिड़कियों से झाँकते

अब घनी होकर दृढ़ायी साँझ।। विरह-सी.....

गोधूलि की सब हलचलें हैं मौन

केवल सरकती हर तरफ यह पौन

गोष्ठ के उठते धुँओं से दोस्ती

साँझ की है, टिक रहे फिर कौन?

साथ चलता अंधेरा तेरे-मेरे

हर गली, हर घर बुढ़ायी साँझ।। विरह-सी.....

थके बच्चे सो गए सब छोड़

बिस्तरे का कुछ पकड़ते छोर

कुछ पहाड़े रट रहे दीपक जला

कुछ हैं चूल्हे घेर, बहते नोर

माँ सिधाती और देती आँच

बगल में बैठी-बिठायी साँझ।। विरह-सी .....

श्रृंगालों की बढ़ गई हैं मस्तियाँ

और कुत्तों की बढ़ी हैं गश्तियाँ

मंदिरों में घंटियों के शोर

नींद की चलने लगी है कश्तियाँ

पगुरा रहे हैं पशु थके तन मौन

रात में ढ़लती गई साँझ आयी साँझ।।

18.06.2024

37. मत झुलाओ टहनियों को

मत झुलाओ टहनियों को, रो पड़ेंगे

मौसमों की सतायी है जान,

सींचना है प्यार के आसँू यहाँ पर

अधमरे से हो गए हैं प्राण।।

वृक्ष हैं बच्चे, इन्हें मत डराना है

ये हैं नाजुक, प्यार इनको जताना है,

इनका दिल मासूम है, चिहुँकेंगे सुनकर

क्रूरता की बात, सुर-धुन सुनाना है।

खिलखिलायेंगे, हरे हो जायेंगे ये

मुस्कुरा उट्ठेगा वह स्थान।। मत झुलाओ.....

जब-जब ये हँसते हैं बरसते फूल

जब-जब ये रोते पात गिरते धूल,

खुशी में फल डाल जाते झूल

कोंपलों में सिहरनों के मूल।

प्रेम की भाषा समझते ये बड़े

इनको भी तो चाहिए सम्मान।। मत झुलाओ.....

ये बुलाते हैं जलद को पास भी

है हमारे हितों का एहसास भी,

सनसनाती हवाओं में मस्त हैं

और भाता सिर तना आकाश भी

यह हमारा करीबी है व्यक्ति

युगों से रिश्ता रहा अनजान।। मत झुलाओ.....

05.07.2024

38. जब से तू आई है

जब से तू गलियों में घूम के आयी है

चिन्गारी इक खूँ में बरपा आयी है।।

आग लगी है गलियों की दीवारों पर

गजब ढ़ा गया रूप कई किरदारों पर

साँप लोटने लगा कलेजेदारों पर

बिजली गिरी है राह खड़े दिलदारों पर

जब से तुम आँखों-आँखों शरमाई है।। जब से तू .....

शरमाई-सी कलि झुकी है डालों पर

चिपक गईं नजरें सब तेरे गालों पर

आँखों-आँखों में कई सवाल सवालों पर

परिभाषा बदलेगी तेरे जलालों पर

हर दिल में कुछ अलग-सी अगन जलाई है। जब से तू .....

सब करते हैं बातें तेरी जवानी की

चर्चा है हर ओर तेरी कहानी की

नजरों में इक छुपी खुशी जिस्मानी की

खूबसूरती तेरे चेहरे नूरानी की

तूने नजरों से मदिरा खूब पिलवाई है।। जब से तू .....

08.07.2024

39. स्नेह भरी मुस्काती यादें

लू से भरी दुपहरी में पूर्वैया आती जब

स्नेह भरी मुस्काती यादें तेरी आती तब।।

जब से दूर गई मुझसे फूलता कनेर नहीं

आ जाओ फिर पास मेरे कुछ हुआ अंधेर नहीं

मुस्काती तू पोछ पसीना आ, कर देर नहीं

हहराती नदियों-सी आओ हुए अबेर नहीं

प्रश्नभरी नजरों से मुझ पर है मुस्काती सब।। लू से .....

ना-ना करते मुझे लिपटना तेरे नखरे वो

पल-छिन में फिर रूठ भी जाने के भी खतरे वो

कौर-कौर को बाँट के खाने वाले बखरे वो

कई बार तेरी अनुपस्थिति युग सम अखरे वो

दिन तो छोड़ो, रात को नींदे पास न आती तब।। लू से.....

महक उठी जब रात की रानी गंध पास सोयी

खुश्बू बेला बैठ सिरहाने रात-रात रोयी

साँसे तेरी खुश्बू ढ़ूँढे यादों में खोयी

मन की टहनी पर निकली सपने की नव पोयी

मन में उठने लगी नवेली कविता-पाँती अब।। लू से .....

हंसो की पाँतो को जब से आते देखा है

खंजन को अपने घर आतेे-जाते देखा है

बादलके छौनों को ऊधम मचाते देखा है

बिजुरी रेह में तुमको ही मुस्काते देखा है

तुम रिम-झिम बन कर आओ,

जीवन तन-मन पुलकाती सब।। लू से .....

21.07.2024

40. तेरा होना

तेरा होना दीवारों का घर बन जाना है

घर भर के सामानों का मिलकर बतियाना है।।

इन हँसती दीवारों मे हैं स्पर्श तेरे पुलकित

इक सप्राण किरण से जैसे घर भर आलोकित

कोने-कोने में बसन्त का फिर मुस्काना है।। तेरा होना .....

तेरे होने से हरक्षण का क्षण से प्यार हुआ

छोटी-छोटी भी वस्तु का एक किरदार हुआ

स्नेहों से हर संबंधों को फिर महकाना है।। तेरा होना .....

बिना तेरे घर वीराने सा, याद बनी काँटा

हर पल चुभती रही याद, मैंने पल-पल छाँटा

तेरा होना सावन का रिमझिम बरसाना है।। तेरा होना.....

सच पूछो तो तुममें मैं मुझमें तुम घुली हुई

सारी मनस्ग्रन्थि दोनों के बीच है खुली हुई

गा-रोकर एक दूजे का संबल बन जाना है।। तेरा होना .....

लोग बताने है मन में फूलों की बगिया है

उसमें गंध-छन्द तुम हो, साँसें तो रसिया है

पोर-पोर तुमकों ही गंधों से भर जाना है।। तेरा होना .....

29.07.2024

41. तुम सुरधनु के रंग

मेेंहंदी रचे हुए हाथों जब सिर सहलाती हो

पोर-पोर में मेंहंदी के रंग-रस भर जाती हो।।

प्यार से भींनी बातों पर मेरा मन लुट जाता

टूट रहे भीतर रेशम का धागा जुट जाता

भीतर-भीतर पय-पयस्विनी सी बह जाती हो।। मेंहदी रचे .....

तेरे हाथों पूजन-अर्चन से घर दिव्य हुआ

तुलसी का चौड़ा भी महमह होकर नव्य हुआ

पावन-सा घर हो जाता जब साँझ दिखाती हो।। मेंहंदी रचे .....

मेरे खाने में देरी से तुम विचलित होती

स्नेह भरे देती उराहने सिर धरकर रोती

ऐसे ही प्रेमोपहार से मन पुलकाती हो।। मेंहंदी रचे .....

एक कल्पना से मेरा मन विचलित हो जाता

तेरे बगैर जीवन सुन-गुन मेरा नभ रो जाता

मेरे पतझर में बसन्त तुम फूल खिलाती हो।। मेंहंदी रचे .....

मेरी साँसों के तारों में तेरी गंध भरी

तुम हो सुबह-साँझ मेरी तो सुखदायी दुपहरी

तुम अभिलाषा के सुरधनु के रंग बनाती हो। मेंहंदी रचे .....

29.07.2024

42. पावस

झुण्ड में आते हैं बादल पास जाने किसे लेने

अभ्र के छौने घुमाते हैं बिजलियों के खिलौने।।

दूरियाँ कम हो गई हैं धरा-नभ मे आज कल में

बढ़ गई है नभ-कुरंगों में नई-सी होड़ पल में

धरा-वन के वृक्ष पल्लव हाथ ले उनको मनाते

बंज तरू का शील-शीतल खींचते उनको अचल में

मनाते मनुहार की भाषा शिखर के वन सलोने।। झुण्ड.....

मेघ-गर्ज के मृदंगों पर धरा यह नाचती यों

कलावन्ती नर्त्तकी मल्हार में नई काछली ज्यों

फुहारों ने पल्लवों को मोतियों से भर दिया है

झूम कर तरू की टहनिया ँहाल प्रिय का पूछती त्यों

सावनी जलदों को नभ से धरा तक सब है भिंगोने।। झुण्ड .....

चल पड़े निज देश खंजन हवाएँ उनको बुलातीं

कोयली निज तान रह-रह आज भी सबको सुनाती

वर्षा वनों में पक्षियों के वन्द-से प्रायः हैं प्राती

सुबह भी जगती है घूँघट खींचकर सकुची, लजाती

धीवरों की बस्तियों में मस्तियाँ सफरी के दोने।। झुण्ड.....

01.08.2024

43. सावन बहुत जरूरी है पर.....

सावन में सब झूम रहे, पर वासविहीनों को तो पूछो
धर्म सही, पर कर्मशील श्रमहार-नगीनों को तो पूछो।।

स्वर्ग सही, अपवर्ग, सही, पर वर्ग-वर्ग में बँटे हुए हम
स्वार्थ सही, पर मतवादों के कारण कितने कटे हुए हम
भीग रही जब मानवता, निष्ठुर होकर के डटे हुए हम
कृषकों के श्रमदान बने चू रहे पसीनों को तो पूछो।। सावन.....

सावन के झूलों पर बैठीं मस्त हवाएँ खाती परियाँ
गृह-मंदिर सब सजा रहे हैं और टाँकते हैं हम लड़ियाँ
कान्ह- कनौड़े झूल रहे तो शिव पर शत-शत हैं जल-ढ़रियाँ
खींच रहे रेड़ी वालों, भूखों और दीनों को तो पूछो।। सावन .....

दौड़ रहे हैं उल्लासों के घोड़े चढ़े हुए बच्चे भी
हाँफ रहे हैं मिहनतकश, निष्ठावाले और कुछ सच्चे भी
काँप रहे हैं भींग-भींग कर यहाँ-वहाँ पर कुछ अच्छे भी
दोने में रख फूल बेचने वाले, गमगीनों को तो पूछो।। सावन.....

वर्षा के मूसलाधारों में डूब रहा सारा जग-जीवन

पिघल रहे पर्वत, ढ़हते घर और बहे जाते सारे वन

इधर लगाते हैं चन्दन और मंदिर-मंदिर पूजन-वन्दन

खिसक रहे, जो देवभूमि के पर्वत-सीनों को तो पूछो।। सावन.....

यह भी बहुत जरूरी है उत्सव को उत्सव जैसा लेना

यह भी बहुत जरूरी है श्रमशीलो को आदर कुछ देना

यह भी बहुत जरूरी है आए वर्षा-बिजली की सेना

पर यह बहुत जरूरी है जन दुखी, मलीनों को तो पूछो।। सावन .....

दुख पूछो जो छूट गए हैं रस्ते चलते-चलते हमसे

दुख पूछो जो रूठ गए हैं हँसते-हँसते, नयन हैं नम-से

दुख पूछो जो छले गए हैं युवा न थकते थे जो श्रम से

पर यह बहुत जरूरी है दुःख माहजवीनों को तो पूछो।। सावन.....

03.08.2024

44. विषधरो के वेष में .....

हम मनुष्यो ने कहीं विषधर सम्हाला है

रक्त बीजों को धराने कुक्षि-पाला है।।

आतंक है वह कुष्ट कि जिस पर चिपकता है

आतंक वह बाँझी कि जिस जिस डाल उगता है

खींच लेता प्राण-रस उस देश का प्यारे

अंत में उस देश का तख्ता पलटता है।

मत पालना इस जानवर को रूप काला है।। महं मनुष्यों .....

यह जिघांसा का है प्रेमी, रक्त पीता है

बाँटता जब मौत है तब सुख से जीता है,

यह मरण की सेज का आदी, नृभक्षी है

यह वह जहर जो हवा के ही प्राण पीता है।

प्राण इसके सकुन में, कहते हवाला हैं।। हम मनुष्यों .....

यह मनुष्यों में कोई उन्मादिनी शक्ति

तीव्र भौतिकवाद की जड़ घातिनी भक्ति,

इसको मनोविज्ञान की विकृत उपज कह लो

सिरफिरी कुछ दानवी-विस्तार-अनुरक्ति।

हर देश तक है तार यह वह मकड़जाला है।। हम मनुष्यों .....

हमने इसकी जड़ें पाकिस्तान में देखीं

सीरिया, लेबनान, तुर्किस्तान में देखीे,

फिलिस्तीनी में छिपे हमास में देखीं

पहले पहल उगते अफगानिस्तान में देखीे।

अब धधक उठी कि बंग में घोर ज्वाला है।। हम मनुष्यों .....

यह दशशिरा कोई भुजंगी रूप फैला है

यह खदिर है, तिक्त है, यह रस कसैला है

समरूता पर यह असभ्यों की कलुष छाया

नीम चढ़ आया हुआ तीता करैला है

हम मिटा पाए नहीं, इसे सिर्फ टाला है।। हम मनुष्यों .....

07.08.2024

45. तुम न आए

तुम न जाए रात भर

मैं चाँद से बतिया रहा था

तुम न गाए गीत

छत पर रात भर आ, जा रहा था।।

गीत से रिश्ता है

तेरा और मेरा युगों वाला,

चाँदनी से भी कहीं पर

तार जुड़ता है निराला।

तुम न आए क्या करें

नैराश्य बढ़ता जा रहा था।। तुम न आए.....

क्या घरौंदा नहीं रचना?

कर लिया निर्णय, बता दो!

अकेलापन से न बचना?

मेरे मन को इत्तिला दो!

साँझ का दीपक जलाए कौन

खुद बतिया रहा था।। तुम न आए .....

क्या हमारे प्रेम के

कमजोर इतने सरल धागे,

क्या हम्हीं हैं इस जगत में

सबसे बढ़ करके अभागे।

फिर से साँझिल अँधेरा है

स्मरण तेरा आ रहा था। तुम न आए .....

कपोतो पर जब भी पड़ती नजर

कुछ फिर सोचता हूँ

सोचकर चुपचाप आँखें नम

कि खुद फिर पोंछता हूँ।

इक नहीं हम, हैं अनेकों

यही दिल बहला रहा था।। तुम न आए.....

समझता हूँ तुम्हारी भी

विवशता कुछ रही होंगी,

तुमने भी तो विरह की

टीसें कई तो सही होंगी।

कहाँ सुन पाया हृदय- चीत्कार

बढ़ता जा रहा था।। तुम न आए .....

24.08.2024

46. गीत-अगीत में

गीत-अगीत में क्या रक्खा है

दोनों अकथ-कथा कहते हैं

पाखी हो कि मन का पाखी

सच है यह कि व्यथा सहते हैं।।

अनुरागी मन हार गया है

प्यार का सरगम गा-गा करके

प्रीति का पंछी लौट गया है

सुन बाँसुरी को आ-आ करके।

अनुरागी मन सह पीड़ा सह

पीड़ा क्रौंच यथा सहते हैं।। गीत-अगीत .....

अनुरागी मन का बादल है

झिहर-झिहर पड़ता धरती पर

अनुरागी बातास का मन है

सिहर-सिहर बहता सरसी पर।

अनुरागी को अनगिन पीड़ा

जल-जल शलभ शतधा सहते हैं।। गीत-अगीत .....

मदिरालय है व्यर्थ में जाना

पीड़ा कहाँ मिटा करती है

राग-नृत्य की कला व्यथा को

पूरा कहाँ हरा करती है।

जैसे सहते पीड़ पपीहा

विरही मन भी तथा सहते हैं।। गीत-अगीत .....

आशा मन को आ समझाती

व्यथा डराती है पल-पल

निश्छल प्रेमी मन क्या जाने

जग में हैं कितने छल-बल।

द्विधाग्रस्त मन किधर को जाए

अन्तस में क्या-क्या सहते हैं।। गीत-अगीत.....

08.09.2024

47. सच्ची तस्वीरें

सच्ची तस्वीरें भी

ऐसी-वैसी लगती हैं

सच्ची बातें सबको

कड़व जैसी

लगती हैं।।

लोग सच्चाई

सुनने के

आदी कब होते हैं,

लोग मलाई

खाने के आदी

सब होते हैं,

टोंक-टाक कंकड़

लिप्सा हितैषी

लगती हैं।। सच्ची.....

भूख में रोने का

मलतब तो

समझ में आता है,

सत्ता-शासन

बहला-फुसला कर

समझाता है,

आज भी अपनी

देशी सत्ता

परदेशी लगती है।। सच्ची .....

लुट जाने की

कोई नहीं

करारें होती हैं,

हद यह है कि

ऐसे क्षण

सरकारें सोती हैं,

लोकतंत्र में

घटना कैसी-कैसी

होती हैं।। सच्ची.....

सब साबित

करने को आतुर

मैं मालाधारी,

सबकी पुतरी में

बैठी है

कमसिन इक नारी,

सबके अन्दर

एक सचाई

जैसी लगती है।। सच्ची.....

10.09.2024

48. मस्तूल गया

उसे भुलाने की

कोशिश में

खुद को भूल गया,

पूरा ढूबा था

जहाज अब तो

मस्तूल गया।।

नेह नशा की तरह

चबा जाता

भीतर-भीतर,

हाथ न आता

कभी किसी को

एक बटेर-तीतर,

अक्सर आशिक

फाँसी फन्दे

पर है झूल गया।। उसे भुलाने.....

दिल में तस्वीरें

जब-तब

आवाज दिया करतीं,

रोना चाहो भी

आँसूं-पट

तुरत सिया करतीं,

अपहर्ता आ

बड़ी फिरौती

लगा वसूल गया।। उसे भुलाने .....

करना कभी न

दिल का सौदा

कहीं , किसी जन से,

हो जाए तो

चट हट जाओ

नेता के मन-से

भावातुरता-बाढ़ में

अक्सर तट

और कूल गया।। उसे भुलाने .....

सावधान दिल ने

कितने ही

युद्ध रचाए हैं,

लैला की खातिर

मजनू ने

पत्थर खाए हैं।

दिल का सौदा

मँहगा पड़ता

हिल-हिल चूल गया।। उसे भुलाने .....

10.09.2024

49. भूख जब

धूप सरीखी

भूख लगे जब

कौन निदान करे,

घर बैठे राजा-रानी

मिलकर

अनुमान करे।।

कमरतोड़ मिहनत भी

घर का पेट

नहीं भरती,

आपस में ही

रोज समस्याएँ

लड़ती-भिड़तीं,

अधपेटे लेटी

महिलाएँ खुद

बलिदान करे।। धूप सरीखी.....

आश्वासन से

रोटी-चन्दा

थाल में आए कब,

सरकारी फरमान

गरीबों तक

पहुँचाए कब,

जब चिड़िया

चुग जाए खेती

अन्न प्रदान करे।।

साँप और सीढ़ी से

तंग जनता

त्राहि-त्राहि करे,

संसद वाले साँढ़

सभी चट कर

जाए खेत हरे,

तिस पर भूखे

फिरे भेड़िये

कैसे त्राण करे।। धूप सरीखी .....

आदम ने हौव्वा से

बोला तू घर में रहना,

मैं आता बाहर से

होकर कुछ को

टोपी पहना,

मूल समस्याएँ

जस तस हैं

कैसे पहचान करे।। धूप सरीखी.....

जनता ने कुर्वानी

दी थी कि

दिन सुदिन होगा,

सुख-शासन-सत्ता

सब होगा

बदलेगा चोंगा,

किसे पता था

उल्लू के पट्ठे

व्यवधान करे।। धूप सरीखी .....

10.09.2024

50. मर्यादाएँ तोड़ रहे

मर्यादाएँ तोड़ रहे

मर्यादा

कह-कह कर,

पीड़ित पीड़ा झेल रहे

पीड़ा नित

सह-सह कर।।

आँखों में आँसूं आये तो

सुख के कह देना,

मजबूरी चीत्कार उठे

तो सुखबह कह देना,

रोज तमाशे होते हैं

संसद में रह-रहकर।। मर्यादाएँ तोड़ रहे.....

भीख नहीं अधिकार दिला

पर मौन बनी संसद,

कहते हैं जनता की भी

कोई तो होगी हद,

नामुराद वोटों में वादे

फूले टह-टह कर।। मर्यादाएँ तोड़ रहे.....

सबके हाथ झुनझुना आया

जाति-जाति का अब,

राष्ट्रप्रेम बलिदान कर दिया

स्वयंवाद है सब,

छल का तना चन्दोवा

गिरते आँसू बह-बह कर।। मर्यादाएँ तोड़ रहे.....

राजनीति आतंकी-सी हिंसक

हो जाती है

फिर भी जनता बंधुआ-सी

तलवे सहलाती है

रंगे सितारों की हुकुमैती

सिंह ले दह-दह कर।। मर्यादाएँ तोड़ रहे .....

21.09.2024

51. नवीन सृष्टि पर विचार हो

नये जहान में नवीन

सृष्टि पर विचार हो

ठगे गये-से लोग

नयी दृष्टि का सिंगार हो।।

अभी बरस रही है लू

जहीन-से विचार पर,

अभी तरस रही है आँख

चान्दनी के प्यार पर,

अभी जमीन धँस रही

है पाँव के तले यहाँ,

दूध के जले हैं छाँछ

पी रहे दुलार पर,

अभी तो कोई कुछ नया

महीन-सा करार हो।। नये जहान .....

नयी सदी है चाँद पर

यदा-कदा टहल रही,

दुखी मनोदशाओं को

सम्हाल कर बहल रही,

मगर ये युद्ध का नया

पैगाम क्यों सुना रहे,

हस्त खड्ग मौत ले

इधर-उधर मचल रही,

रक्तजिह्व रोक, हरी धरा

क्यों सहार हो। नये जहान .....

मनुष्यता सुखी रहे

वही विकास क्षम्य है,

शिखर-शिखर पे चढ़ रहे

सभी हों पास गम्य है,

बढ़े जो द्वेष क्या करोगे

ले विज्ञानवाद को,

बाँट दे मनुज को जो

विकासवाद वो प्रणम्य है,

करार हो, विचार हो

इंसानियत आधार हो।। नये जहान.....

गुटों में बँट के विश्व

सोचता है सिर्फ आज पर,

दूसरों को लूटकर

विचारता सुराज पर,

वही उड़ा रहा है शान्ति

दूत आसमान में,

वही बधारता है गल्प

स्थिर-सुखी समाज पर,

रक्त क्या कभी बुझा

सका क्षुधा उदार हो।। नये जहान .....

21.09.2024

52. जिनको हम

जिनको हम कहते थे अपने

सपने लगे हैं,

रोज-रोज बँटवारे की रट

रटने लगे हैं।।

प्यार करो, सींचो फूलो-सा

काँटे बन चुभते,

कील ठुकी सीने पर

पस-से रहते हैं बहते,

अन्दर है चीत्कार

शब्द भी कँपने लगे हैं।। जिनको हम कहते .....

सम्बन्धों की माया नगरी

अजब अनोखी है

भूल भुलैया में भटकी

ममता की सोखी है,

मत्स्य-जाल के न्याय में

मन कुछ फँसने लगे हैं।। जिनको हम कहते .....

अनस्तित्व का अस्तित्वों में

कैसा रूपान्तर,

हो जाता है भावों का भी

जग में कायान्तर,

प्रेम-प्रीत सब द्रव्यमान

से नपने लगे हैं।। जिनको हम कहते .....

बहुत शान्ति हो जहाँ वहाँ

आवर्त भी आता है,

शान्ति विनाशक कुछ हलचल

देकर के जाता है,

ऐसे ही उन्माद-गरल

पनपने लगे हैं।। जिनको हम कहते .....

इच्छाएँ बलशाली होतीं

हर युग में, हर पल,

हर तटस्थ को पीना पड़ता

हर क्षण गरल तरल,

हर शापित घर में

विद्वेषी तपने लगे हैं।। जिनको हम कहते .....

05.10.2024

53. प्यार दिया होता तो.....

तूने प्यार दिया होता तो

कुछ पल जी लेता सपना,

चित्र फलक पर आड़ी-तिरछी

रंग भी भर लेता अपना।। तूने प्यार.....

सपनों के बाजारो से कुछ

सपने ले आता जाकर

उसे तुम्हारे संग बाँटता

खुश रखता मन बहलाकर,

तूने साथ दिया होता तो

दुख में कम होता कँपना। तूने प्यार.....

कुछ अनमोल सितारे लाकर

टाँक दिए होते कच में,

सुबह-सुबह की लाली से

आँगन भर देता मैं सच में,

तूने बिहँस दिया होता तो

पारिजात झरता कितना।। तूने प्यार.....

तू फुलवाड़ी में बहकी

महकों की चाल निराली हो,

तू कदम्ब-सी खिलनेवाली

लचकदार-सी डाली हो,

गंध उधार दिया होता तो

उपवन-सा होता खिलना।। तूने प्यार.....

हर साँसों में महक तुम्हारी

अब भी महका करती है,

इन आँखों में छवियाँ तेरी

रह-रह उभरा करती हैं,

तू ने वरण किया होता तो

सच सपना होता दिखना।। तूने प्यार.....

हम परवाने थे, दीपक तुम

जल-जल करके राख हुए,

तू ने दिया जलन का न्योता

हम जल करके खाक हुए,

तू ने थाम लिया होता तो

क्यो अन्तस् रोता अपना।। तूने प्यार.....

07.10.2024

54. हमारा देश यह बुलंद हो

हमें तो चाहिए हमारा देश यह बुलंद हो

हमें तो चाहिए सभी को देश यह पसंद हो

हमें तो चाहिए फलक पे देश यह चढ़ा रहे

देश-गर्व-गान से भरे हरेक छंद हो।। हमें तो .....

हम अमन के रास्ते पे चल रहे, रहें सभी

सुख, समृद्धि, शान्ति के प्रवाह में बहें सभी

द्वेष का प्रलाप बन्द हो हमारे देश में

एक स्वर से भारती की जय सदा कहें सभी

अब हमारे देश में आतंकवाद बन्द हो

राष्ट्र हो समृद्ध और, शत्रु और कुंद हो।। हमें तो .....

हम न चाहते किसी को लूट कर बड़े बने

हम न चाहते प्रकृति को चूसकर हरे बने

हम न चाहते दखल हो भूमि पर मेरे कोई

हम तो चाहते अहिंसा, सत्य पर खरे बने

शास्ता का पंचशील हर कहीं पसंद हो

हम तो चाहते हमारे देश में आनंद हो।। हमें तो .....

हम तलाशें विश्व में मनुष्यता की जय-कथा

हर सकें दुखी, उदास, हारने की सब व्यथा

हम हटा सकें विनाश की घटा आकाश से

हम मिटा सकेंगे हिंस्र-पाशविक सभी प्रथा

जग नयी-सी कान्ति ले उगे कि जो अमंद हो

विश्व-मानवों का एक स्वरूप अक्लमंद हो।। हमें तो .....

इस तरह खिले मनुष्यता कि शांति हो सदा

हो विकास पर विनाशवाद-मुक्त सर्वदा

हो हमारी चेतना निसर्ग रक्षिका सदा

अखंड यह धरा रहे, न हो कोई कभी जुदा

खुले रखें विचार धर्म के न समवस्कंद हो

आस्था हो दृढ़ मगर कि आदमी स्वच्छन्द हो।। हमें तो .....

इस सदी में हम महान नायकों में हों खड़े

कर सकेंगे काम विश्व के लिए बड़े-बड़े

स्वर्ग पर चढ़ेंगे रथ हमारे कीर्तिवान के

चमक रहे हैं मणि-मुकुट अभी से वे जड़े-जड़े

सदी हमारी होगी अब यशों के दुरत समंद हो

अचूक से बढ़े चलेंगे अब न कोई द्वन्द्व हो।। हमें तो .....

1. समवस्कंद- किले की चहारदीवारी

2. समंद- अश्व, घोड़ा

11.09.2024

55. तुम्हारे प्यार में

तुम्हारी राह में हमने बिछाए फूल हैं कितने

तुम्हारी चाह में हमने सहे भी शूल हैं कितने

भुलाना अब कठिन है तुमको हम आगे निकल आए

तुझे पाकर बता देंगे कि हम मकबूल हैं कितने।।

हमारी चाहतों ने ही हमें बर्बाद कर डाला

हमारे दिल में जलती है तुम्हारे प्यार की ज्वाला

इसे हमने सम्हाला है दिलो-जाँ में छुपा करके

सतत चलती ही रहती है तुम्हारे नाम की माला।

भुलाना अब कठिन है याद की दरिया मे बाढ़ आयी

सभी ये डूबते ही जा रहे तट-कूल हैं जितने।। तुम्हारी .....

रजामंदी तुम्हारी चाहिए सावन बरसने की

रजामंदी तुम्हारी चाहिए दिल के धड़कने की

रजामंदी तुम्हारी चाहिए मधुमास खिलने की

रजामंदी तुम्हारी चाहिए आँखों के मिलने की।

रजामंदी तुम्हारी चाहिए इक फूल दे पाऊं

कि तेरे चाहनेवाले मेरे समतूल हैं कितने।। तुम्हारी .....

तेरे आगोश में होगी चुभन तो देख लेंगे हम

तेरे खामोश में होगी जलन तो देख लेंगे हम

तेरे नखरे हजारों हों उसे भी झेल ही लेंगे

तुम्हारे हुस्न के सारे सितम भी देख लेंगे हम।

तुम्हारे प्यार में रंजिश की कोई क्या जगह होगी

करीब आकर बतायेंगे कि चुभते शूल है कितने।। तुम्हारी .....

12.10.2024

56. देश अंगारा बन जायेगा

नादानी से मत छूना

अंगारा बन जायेगा

यह भारत है, अग्निदेश

दुबारा बन जायेगा।।

यह साधना-भूमि ऋषियों की

वेदों ही ऋचा रची है,

यह दधीचि के अस्थि दान की

साक्षी धरा बची है,

कर्णार्जुन, शिवि, रन्तिदेव

यह सारा बन जायेगा।। नादानी से मत छूना .....

मर्यादा की यहाँ रची है

एक अनोखी रेखा,

कंचन मृग के पीछे रावण-वध

की कथा को देखा,

सत्य-शील-सौन्दर्य पिघल

पौरुष-धारा बन जायेगा।। नादानी से मत छूना.....

वंशी के तानों पर सारी

सखियाँ नाच रही थीं,

कुरूक्षेत्र में वही सजग हो

गीता बाँच रही थी,

क्षण में वंशी छोड़ सुदर्शन-

आरा बन जायेगा।। नादानी से मत छूना .....

मर्यादा मंे जब तक है

गंगाजल बहता है,

तोड़े जब मर्यादा तब

प्रलय-जल बहता है,

साठ-सहस- पितर-उद्धार-

किनारा बन जायेगा।। नादानी से मत छूना .....

14.10.2024

57. शुभे ! भुला मत देना

बचा अगर हो आँखों में-

पानी तो शुभे! भुला मत देना,

अपना मिलन अगर क्षण भर का

रख पालने सुला मत देना।।

बिछड़न-मिलन तो होता रहता

जीवन-पथ तो रहता चलता,

पर स्मृति के वातायन में

चित्र-कुरंग तो खूब मचलता,

छोटे पल में युग की मृदुता

अपनापन को रुला मत देना।। बचा अगर .....

प्यार तो आँखों से चलकर के

दिल की वादी में रमता है,

तन-मन सब बिसरा देने की

इसके मद में वो क्षमता है,

एक पागलपन ला देता जो

मुस्काकर बहला मत देना।। बचा अगर .....

क्षण-विशेष में दो अस्तित्वों-

का भी विलय हुआ करता है,

क्षण-विशेष में दो आत्मा का

लय आपस में हुआ करता है,

तुम दैवीय चमत्कारो को

साधारण बतला मद देना।। बचा अगर .....

प्रेम अमरता की तलाश है

विरही दग्ध रहा करता है,

हर परमाणु मिलन को आतुर

और विदग्ध रहा करता है,

शुभे! मधुर प्रेमोपहार से

वंचित कर दहला मत देना।। बचा अगर .....

मर्यादाएँ वंचित करतीं

महामिलन के क्षण-विशेष को

सीमाएँ ज्यों रोका करतीं

एक देश से दूसरे देश को,

दो देहों में बद्ध आत्मा

मिलनातुर, टहला मत देना।। बचा अगर .....

यही एक पल कोमल स्मृति में-

बस जाता है युगों-युगों तक,

इसी एक कोमल डोरों से बँध

महका सुख युगों-युगों तक

तुम रेशम के इन तारों को

कटु वचनों से जला मत देना।। बचा अगर .....

15.10.2024

58. भाग्य नहीं रूठा करता है

क्या रोना है सपने का, सपना-

पल-पल टूटा करता है

एक रूठने से सपना के

भाग्य नहीं रूठा करता है।। क्या रोना है .....

यादें नहीं भुलाने की हैं

वादा नहीं भुलाने का है

एक पंथ है जग-जीवन का

जीवन-छन्द तो गाने का है,

सच्चे प्रेमी प्रेम-पंथ पर

चल-चलकर तूठा करता है।। क्या रोना है .....

फूलों से उपवन सजता है

उपवन तब महका करता है,

रंग-विरंगी तितली, भौंरे

खग-दल फिर चहका करता है,

एक कुुसुम के कुम्हलाने से

उपवन कब रूठा करता है।। क्या रोना है .....

आता है जग में बसंत जब

हँसने लगते दिन और रातें

छा जाती मदहोश जवाानी

हर प्रेमी की मीठी बातें,

सब तूठे कि रूठ जायँ पर

कब प्रेमी रूठा करता है।। क्या रोना है .....

16.10.2024

59. सपने कई.....

सपने कई सजाने वालो

पथ पर दीप जलाने वालो

बिन बादल बरसाने वालो

यादों में खो जाने वालो

एक दीपक के बुझ जाने से

पथ कब कुपथ बना करता है।। सपने कई .....

अंगारे पर चलना सीखो

दुःख मे खूब सँवरना सीखो

प्रेम-सलभ-सा मरना सीखो

खुद आँखों में बढ़ना सीखो

दुरभिसंधि जब आ जाए तो

कायर-कृपण डरा करता है।। सपने कई .....

परछाई से कभी न डरना

अँगड़ाई से और निखरना

मुट्ठी में आकाश है करना

नेह की डोर पकड़कर रहना

एक मुट्ठी के खुल जाने से

कब आकाश उड़ा करता है।। सपने कई .....

है बसन्त तो आता-जाता

पतझर भी कुछ सिखला जाता,

सावन झड़ी सुहानी लाता

धरती से रिश्ता समझाता,

एक पतझड़ के आ जाने से

उपवन नहीं मरा करता है।। सपने कई .....

आ जाते बरसाती बादल

ज्यों युवती आँखों का काजल,

बरसा करते पल-छिन थल-जल

प्यासी धरती का है जो हल,

एक बादल के मिट जाने से

सावन नहीं मिटा करता है।। सपने कई .....

मन में टीस बड़ी होती है

क्षण में पीड़ हरी होती है,

कुछ भीतर में अड़ी होती है

याकि कील गड़ी होती है

एक पीड़ा के उठ जाने से

आँसूं नहीं घटा करता है।। सपने कई .....

16.10.2024

60. ये कैसी होली है

ये कैसी होली है

दुनिया जब खूनों से

रोज रंगे चोली है।।

रंग तो बहाना है

दुश्मनी निभाना है

अपने निर्वाक् मन को

ताप से जलाना है।

कैसे सम्बन्धों की

खोली पर खोली है।। ये कैसी .....

सारा कुछ खाली है

मुख में बस गाली हैं

देखो, जिधर भी देख

टॉप माला खाली है।

इनसां अब नग्न हुआ

लज्जा ही धोली है।। ये कैसी .....

घूम गया समय वक्र

सब के हुए भाग्य चक्र

दूध का जला हुआ है,

पी रहा है फूँक तक्र

शुभता की जैसे कि

उठ रही-सी डोली है।। ये कैसी .....

सब हैं निर्वाक् यहाँ

सीना है चाक यहाँ

आँसूं उमड़ते हैं

बहेंगे क्या खाक यहाँ।

केवल उदासी है

हँसी ना ठिठोली है।। ये कैसी.....

20.03.2025

61. ग्रीष्मी ताण्डव

मृद्‌गंधी इन नेहों पर ललचाया मन

स्वेदसने इन देहों पर लुट आया मन।

नाच रही लू ताता थैया पवन संग ले

बाँट रही है धूप बलैया अगन संग ले

सोख रहा है सूरज सबके रक्त वारि-सा

पवन बालि-सा खींचे शक्ति तपिश अंग ले

इन सबसे कर युद्‌ध अडिग जो देह स्नात जल

कर्म युयुत्सु देवों पर भर आया मन।। मृदगंधी इन .....

पछिया ने झकझोर दिया है बाध-वनों को

बिड़रो ने अंग तोड़ दिया है वृक्ष-तनों को

पूर्वेया ने मधुआ से मज्जर झुलसाया

गृष्मी ताण्डव मुरझाते हैं क्षुधित जनों को

प्यासी धरती है होंठ फटे, है त्राहि-त्राहि जग

हरे खड़े वृक्षों पर सच ढर आया मन।। मृदगंधी इन .....

इस झुलसे में पत्ता वीन रही लछमिनिया

घर-घर टांग पसार हाँफती जब है दुनिया

बिसुआ चुभक रहा मटमैले पोखर जल में

बुधनी बुद्धू बनी हुई रोए दुख धनिया

हाँफ रहे हैं वृषभ, महिष, जी बाते कुत्ते

गर्म हवा ने गृहिणी का भरमाया मन।। मृदगंधी इन .....

दुख धनिया - दुख की कथा

13.05.2024

62. जमीन पे गिराए तुम

क्या खता थी डाल की

टिकोले ने किया जुलुम,

बिफर गए कि तुम हवा

जमीन पे गिराए तुम।।

ये डाल पे थे झूलते

जरा-जरा से झूमते

खुशी से खिल-खिला रहे

टिकोले नभ को चूमते।

नौनिहालों ने दिया

क्या दर्द आये घूमते

सहम गए थे नेकदिल

दहाड़ते-से आए तुम।। क्या खता .....

बागवाँ के वर्षभर की

साधना विफल हुई,

कचोटती-सी आत्मा

कि देखकर विकल हुई।

आस थी, गिरी जमीन पे

न नींद पल हुई,

वेग के प्रयोग से

मगन सपन गिराए तुम।। क्या खता.....

अभी-अभी तो धड़कनें

उठी थी बाग-बाग में,

अभी-अभी तो चेतना

खिली थी इस पराग में

अभी-अभी टिकोले

झूमते तुम्हारे राग में

डर के गिर गए धरा पे

इस कदर हिलाए तुम ।। क्या खता .....

25.04.2025

63. धुआँ-धुआँ

धुआँ-धुआँ हुआ है जल

अगन-अग हुआ है पल,

वो रौशनी तो बाँटता

जलन बहुत है, छल ही छल

ग्रीष्म में ये सूर्य की प्रचण्डता

धरा विकल।।

घरों में लोग बंद हैं, मलिन सभी के छंद हैं

पसीने तर है देह-देह, तेजवंत मन्द हैं

बरस रही है अग्नि, हम कहाँ चलें सम्हल-सम्हल।। धुआँ .....

कूप-नल सुखा रहे, तडाग मन दुखा रहे

आसमान जलद-खण्ड आस बस बँधा रहे

छाँवदार वृक्ष शुष्क, विवरजीव है निकल।। धुआँ .....

यह प्रलय-सा ताप है, प्रचंड रवि प्रताप है

क्या धरा के जीव का ये आखिरी प्रलाप है?

झपट रही हैं आंधियाँ, लपक रही हवा गरल।। धुआँ .....

16.05.2025

64. राम लला आयेंगे

डॉ॰ अमर कान्त कुमार

राम लाल आयेंगे अपने अवधपुरी दरबार में

जिनकी महिमा व्याप रही है कण-कण में, संसार में।।

पीत वसन, सिर मुकुट विराजे, लट-लटकनि है गाल पर

गोरोचन का तिलक सजा है उन्नत चम-चम भाल पर

कौशल्या रानी रीझेगी ठुमुक-ठुमुक-सी चाल पर

राजा दशरथ मुग्ध रहेंगे तोतरे वचन, सवाल पर

शिशु-लीला लख मगन प्रजा होंगी अपने-उद्धार में।। रामलला आयेंगे....

मर्यादा पुरूषोत्तम का यह अवतार देश का गौरव है

रामराज्य की करें स्थापना, यही हमारा सौरभ है

राम हमारे तन-मन में हैं, राम शील-सौन्दर्य में हैं

जन-जन में है राम विराजित, शुभ, मंगल औदार्य में हैं

भारतवर्ष है राम की भूमि, राम मित्रता प्यार में।। रामलला आयेंगे....

दो द्वीपों के बीच सेतु रच राम बने त्रिभुवन नायक

गिद्ध, भीलनी, वानरादि मैत्री से सब के सुख दायक

राम बसे हैं संबंधों में, निर्बल जन के राम स्वजन

जीह देहरी दीप जलालो राम नाम का, रहो मगन

राम तुम्हारी सद्वृत्ति है, राम हृदय-झंकार में।। रामलला आयेंगे....

राम ने सिखलाया है आज्ञा-पाल इस संसार को

राम ने सिखलाया भाई से प्रेम जगत-व्यवहार को

राम ने राजा धर्म सिखाया प्रजा बड़ी, दरबार को

राम ने भक्ति का मर्म बताया घर-घर को, हर द्वार को

राम की महिमा राम ही जाने, राम बड़े अवतार में।। रामलला आयेंगे...

65. बिछा दो फूल

बिछा दो फूल हर पथ पर

कि राजा राम आए हैं

सजा दो दीप की पाँती

अवध भगवान आए हैं।।

नहा दो चन्दनी जल से

लगा दो तिलक गोरोचन,

पिन्हा दो पीत पीताम्बर

मुकुट धर शीष, कर वन्दन।

बिठाओ अवध सिंहासन

अवधपति राम आए हैं।। विछा दो फूल...

उतारो आरती उनकी

उतारो बलाएँ माता

प्रजाजन चरण रज लेलो

करो सेवा जो है भाता

चॅवर से व्यजन कर उनको

अमरधन राम आए हैं।। विछा दो फूल...

अमर है कीर्ति राघव की

अतुल बल विश्वनायक का,

मगर करुणा भरा दिल है

सभी के मुक्ति दायक का।

समर्पण कर प्रभु पद में

मुक्ति के धाम आए हैं।। विछा दो फूल.....

है बरसा प्रेम शबरी पर

कृपा वानर पे बरसायी,

उवारा गीध को पल में

विभीषण पर कृपा आयी।

प्रभु हनुमान के प्यारे

सियावर राम आए हैं।। विछा दो फूल.....

18.01.2024

कवि परिचय

अमर कांत कुमर

शिक्षा: एम. ए., पी-एच.डी. (हिन्दी), साहित्याचार्य

संप्रति: एसोसिएट प्रोफेसर एवं अध्यक्ष, एम. एल. एस. एम. कॉलेज, दरभंगा (बिहार)

प्रकाशन:

; समय के साये (गजल संग्रह) ; गा बंजारा (गीत-संग्रह) ; इक्यावन श्रेष्ठ कविताएँ, सृजन सरिता,

; सृजन प्रवाह, ; सृजन दीप, ; सृजन पथ

राष्ट्रीय-अन्तरराष्ट्रीय शोध-पत्रिकाओं में अनेक शोधालेध प्रकाशित अनेक पुस्तकों में शोधालेख एवं आलेख प्रकाशित।

हंस, राष्ट्रधर्म, चाणक्य वार्ता, साहित्य यात्रा, व्यवसाय चक्र और अनेक स्थानीय पत्रिकाओं में कविताएँ प्रकाशित।

आकाशवाणी दरभंगा से 35 वर्षों से कविताएँ-आलेख समय-समय पर प्रसारित एवं बिहार के सभी अखबारों में लेख प्रकाशित।

भारत के दर्जनों राष्ट्रीय-अंतरराष्ट्रीय सोशल पटलों पर अनवरत काव्यपाठ, कवि, गीतकार, गजलगो के रूप में चर्चित।

सम्मान

'गोपाल सिंह नेपाली सम्मान' 2019 राष्ट्रकवि रामधारी सिंह दिनकर द्वारा स्थापित मंच 'ज्योत्स्ना- मंडल', जयनगर, बिहार द्वारा।

'मिथिला रत्न' अंतरराष्ट्रीय मैथिली सम्मेलन 2020 आयोजित वृन्दावन (उ. प्र.)

'मिथिला विभूति सम्मान' मिथिला विभूति-पर्व- समारोह, विद्यापति सेवा संस्थान, दरभंगा, बिहार द्वारा

'प्रेमचंद सम्मान' प्रेमचंद जयनती समारोह समिति, दरभंगा द्वारा 2019 में

संपादन

1. 'स्वतंत्रता संग्राम के पुरोधा: महाराज लक्ष्मीश्वर सिंह (2011), 2. 'महाराज लक्ष्मीश्वर सिंह: व्यक्ति और कृति' (2021)

संपादन सहयोग

1. विमर्श के नए क्षितिज' (पुस्तक) संपादन-सहयोग, 2. कालेज पत्रिका- 'प्रज्ञा' के प्रधान संपादक, 3. एक दर्जन से ऊपर स्मारिकाओं का संपादन

संपर्क: मानस, न्यू प्रोफेसर कॉलोनी, दिग्घी पश्चिम, दरभंगा, बिहार 846004

ई-मेल: ंउंतांदजानउंत1959/हउंपसण्बवउ

मो. 9430236078